International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in July 2022, iajesm2014@gmail.com

देश विभाजन का दर्द और गुलज़ार

राकेश कुमार, शोध छात्र, हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, आगरा रोड, जयपुर (राजस्थान)-भारत (email.Rakeshgalib@gmail.com)
डॉ.पूनम लता मिड्ड़ा, अनुसंधान गाइड, **प्रोफेसर, हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, आगरा रोड जयपुर (राजस्थान) भारत**

शोध सार

विभाजन शब्द ; जितना सहज लगता है । उतना ही मार्मिक भी है ,अगर किसी ने इसके दर्द को झेला हो तो , विभाजन का अर्थ है, किसी एक बस्तु ,विचार ,अंक को दो हिस्सों में बांट देना । ये शब्द सुनने को जितना सहज लगता है, उतना ही इसमें दर्द भी है । परंतु जिसने भी विभाजन का दंश झेला है, वही विभाजन के मूल अर्थ को जान सकता है । हिंदी भाषा के प्रसिद्ध शायर,गीतकार,कवि,पटकथा लेखक, गुलज़ार साहब भी इस विभाजन के दंश से काफी प्रभावित हुए थे ।

विभाजन का दंश चाहे वो समुदाय आधार पर हो,या क्षेत्र आधार पर या राजनीतिक आधार पर ,विभाजन का दंश भारत देश चिरकाल से झेलता जा रहा है । आजादी से पहले विदेश आक्रांताओं ने पहले भारत पर अपना अधिकार किया समय- समय उन्हें जब भी मौका मिला राजनीतिक आधार पर भौगोलिक आधार पर देश का विभाजन होता रहा है ।

विभाजन जैसी कुरीति से राज्य की प्रजा ही सबसे ज्यादा प्रभावित होती है । सन 1947 में जिस धार्मिक मंशा के चलते दुकड़ो में देश का विभाजन किया गया । मोहम्मद अली जिन्ना दो -राष्ट्र सिद्धांत को मंजूरी दी गयी । इससे किसी को नफा-नुकसान हुआ इसका आंकलन आज तक नही हो सका । एक ऐसे देश जहां हर एक धर्म फला-फूला विभिन्न संस्कृतियों का मिलाप हुआ । जिसको आदिकाल से ही विश्वगुरू कहा जाता था अनेकता में एकता बाला देश कहा जाता था । उस देश के खंड -खंड करके कई टुकड़े कर दिए गये, आखिर किसको इसका फायदा या नुकसान हुआ है ,यह अभी भी एक आंकलन का विषय राजनीतिक पंडितों के लिए बना हुआ है ।

मूल शब्द :- आदिकाल,दंश,मंशा,अनेकता,वतन,सिद्धांत,इमेजेज, स्मृतियों,बंटबारा, पाकिस्तान, दीना,पार्टीशन,सहिष्णुता आदि ।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

देश विभाजन और गुलज़ार

मूल आलेख :- कोई भी शक्ति, कोई भी सिद्धांत लोगों को धर्म के आधार पर ,आर्थिक आधार पर ,भौगोलिक आधार पर ,सांस्कृतिक आधार पर लोगो को तो बांट सकते है परंतु एक रचनाकर को बांटना उनके लिए टेढ़ी खीर है । कियूंकि एक कलाकार एक रचनाकार की प्रतिभा को कौन बांट सकता है । गुलज़ार भी उन्हीं रचनाकारों मे से एक है, जिन्होंने विभाजन के दंश को झेला और अपनी स्मृतियों में हमेशा बचपन की उन यादों को जिंदा रखा जो बंटवारे के बाद पाकिस्थान में रह गयी थी ।

गुलज़ार अपनी पुस्तकों या वक्तव्य में यह बताते है कि ; मैंने आठ की उम्र में पिता के साथ पाकिस्तान छोड़ दिया था । मेरा बचपन भी वहीं छूट गया , मैं 2004 में एक इमरजेंसी बीजा पर कासमी साहब से मिलने गया था । उनकी तबियत खराब थी । मगर मुझे अपने जन्मस्थली दीना जाने की बड़ी आरज़ू थी, कई बार मेरा मन किया जाने का मगर उन बचपन की स्मृतियों की इमेजेज को घुल जाने से बचना चाहता था ; जिन्हें मैंने जिया था, और हमेशा एक डर से लगा रहता था ,कि वहां भी सब कुछ बदल चुका होगा ।

आखिर एक मौका आया, जब मैं पाकिस्तान गया;तब एक अजीब रोमांच था,धुकधुकी और बचपन के घर को लौटकर देखने की कल्पनाओं का अंबार ; मैं बाघा बार्डर पार करना चाहता था, उस मिट्टी पर चलना इस तरह लग रहा था, जैसे अपने घर की तरफ, अपनी जन्मस्थली की ओर ,भागा जा रहा हूँ ,छुटा हुआ वतन ; अहसास बहुत गहरा और अंदरूनी था ।

अनायास जैसे ही सरहद पर पहुंचा ,मैंने अपनी मोजड़िया उत्तर ली ,मैं आपमे नंगे पाँव उस मिट्टी पर रखना चाहता था I (1)

गुलज़ार का बचपन और विभाजन

गुलज़ार का जन्म 18 अगस्त 1934 दीना वर्तमान पाकिस्तान में हुए था I गुलज़ार के पिता माखन सिंह कालरा एक सिख धर्म से सम्बंध रखते थे । गुलज़ार का सारा बचपन दीना में बीता ,अपने बचपन के उत्तरकाल में गुलज़ार को विभाजन दीना से दिल्ली ले आया, गुलज़ार अपने बचपन को सदा के लिए पीछे छोड़ कर; गुलज़ार का बचपन; एक ऐसे बच्चे का था जहां सब कुछ नया ,अपना कुछ नही I जहां एकाकीपन का खामोश अहसास, उसका साथी बन के दीना से दिल्ली, और फिर दिल्ली से मुंबई तक उसका हमसफ़र रहा I देश विभाजन और अपनी बचपन की स्मृतियों को याद करते हुए 'भमीरी' कविता में गुलज़ार लिखतें है : –

हम सब भाग रहे थे रिफ्यूजी थे
माँ ने जितने ज़ेवर थे,
सब पहन लिये थे।
बाँध लिये थे....
छोटी मुझसे.... छह सालों की
दूध पिला के,खूब खिलाके
साथ लिया था ।
मैने अपनी ऐक "भमीरी"
और ऐक "लाटू"
पजामे मे उड़स लिया था।
रात की रात हम गाँव छोड़कर
भाग रहे थे, रिफ़्यूज़ी थे.
आग धुऐं और चीख पुकार के
जंगल से गुज़रे थे सारे
हम सब के सब घोर धुऐं
मे भाग रहे थे।
छोटी मेरे हाथ को पकड़कर दौड़ रही थी
एकाएक छोटी का हाथ मुझसे छूट गया और वो वहीं रह गयी
वहीं उस दिन फेंक आया था अपना बचपन ।
लेकिन मैंने सरहदों के सन्नाटों में अभी भी देखा हैं
एक भमीरी अब भी नाचा करती है एक लाटू अभी भी घुमा करता हैं I (2)

जहां गुलज़ार में अपने साहित्य में हमेशा अपने मार्मिक बचपन की यादों को संजोया है, वहीं गुलज़ार ने कई बार अपने घर दीना का भी जिक्र किया है ।

जिक्र झेलम का है या बात दीने की ,चाँद पुखराज का रात पश्मीने की I गुलज़ार का बचपन जिन्ह गलियों में बीता ये गली लगभग चार फुट चौड़ी है I गुलज़ार का घर उसी गली में स्थित है ,उनके घर के दूसरे हिस्सों में

घर का निर्माण कर दिया गया है । गुलज़ार के दीना आने के बाद अब इस गली का नाम' गुलज़ार स्ट्रीट' के नाम से पुकारा जाता है ।

वह गवर्नमेंट हाई स्कूल जहां से गुलज़ार ने शुरुआती तालीम(पढ़ाई) हासिल की थी ;वो दीना के मियां मोहल्ले में स्थित है । स्कूल का वह हिस्सा जहां गुलज़ार की कक्षा थी ,अब नही है । स्कूल के हेड मास्टर जावेद अहमद बताते हैं, स्कूल का वो हिस्सा अब खत्म हो गया है,लेकिन स्कूल के एक नए ब्लाक का नाम गुलज़ार कलरा ब्लाक' रखा गया है । हालांकि गुलज़ार जब वहां पढा करते थे उस समय स्कूल का यह हिस्सा खेल मैदान था । (3)

गुलज़ार की कविता में उन लाखों बच्चों की हकीकत है जिन्होंने 1947 देश विभाजन के बाद अपना बचपन ,घर बार,बचपन के दोस्त ,अपना देश सभी खोये ।

दीना में अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए गुलज़ार अपनी कविता में लिखते है –

मैं शायद छः बरस का था ,अब छप्पन का हूँ

मैं अब भी हमिला हूँ याद से उसकी,

वो लड़की अब भी मुझको याद आती है ।'(4)

गुलज़ार के गीतों में उनकी दीने की स्मृतियां हमेशा देखने को मिलती है ।

माचिस फ़िल्म के लिए गुलज़ार ने लिखते हैं ' छोड़ आये हम वो गालियां , जिससे उनके मनोभाव का पता चलता है कि गुलज़ार अभी भी दीने की गलियों का नही भूले है, अभी भी यादों में वो इन गलियों में जीते है ।

गुलज़ार दीना छोड़कर अपने परिवार के साथ दिल्ली आ गए ,लेकिन गुलज़ार की ज़िंदगी और दिल से दीना न निकल सका दीना को याद करते हुए; एक जगह, गुलज़ार अपने ख्वाब को अपनी कलम से बयान करते है :-

तुम्हे "दरिया -ए-झेलम" पर अजब मंजर दिखाए थे

जहाँ तरबूज पर लेटे हुए तैराक लड़के बहते रहते थे—

जहाँ तगड़े से एक सरदार की पगड़ी पकड़ कर मैं,

नहाता,डुबकियाँ लेता ,

मगर जब गोता आ जाता तो मेरी नींद खुल जाती ।

मगर ये सिर्फ ख्वाब में ही मुमकिन है

वहां जाने में अब कुछ दुश्वारियों है रियासत की ।

वतन अब भी वही है, पर नही है अब वो मुल्क मेरा

वहाँ जाना हो तो अब दो-दो सरकारों के

दसीयों दफ्तरों से

शक्ल पर लगवा के मोहरें ख्वाब साबित

करने पड़ते हैं । (5)

गुलज़ार साहब अपने 'वतन ,और' मुल्क' से जज़्बाती और बावस्तगी की बजह से

जड़ों और शाखों को यकजा करने की कोशिश करते हैं ......और इस मुमकिन नही होता तो कहते है:

सुबह सुबह इक ख्वाब की दस्तक पर दरवाजा खोला देखा

सरहद के उस पर से कुछ मेहमान आये है ।

आंखों से मानुस थे सारे चेहरे सारे सुने सुनाये

पावं धोये हाथ धुलाये,आंगन में आसान लगवाए ।

और तनूर पे कुछ रोटी के मोटे मोटे रोट पकाये
पोटली में मेहमान मिरे
पिछले सालों की फसलों की गुड लाये थे
आंख खुली तो देखा घर पर कोई नही था
हाथ लगाकर देखा तो तंदूर अभी तक बुझा नही था
ओर होंठों पर मीठे गुड़ का जायका अभी तक चिपका रहा
ख्वाब था शायद
ख्वाब ही होगा
सरहद पर कल रात, सुना है गोली चली थी ।
सरहद पर कल रात, सुना है
कुछ ख्वाबों का खून हुआ था ।(6)

इस कविता में गुलज़ार की मनोवृत्ति से प्रतीत होता है कि, गुलज़ार हमेशा सरहदों और देश विभाजन के खिलाफ थे ,कियूंकि गुलज़ार ने भी उतना ही खोया जितना अंसख्य लोगों ने खोया , जितना हिसाब शायद किसी भी किताब के पन्ने पर दर्ज न हो ।

विभाजन के साथ ज़िंदगी के जख्म

गुलज़ार ने विभाजन के जख्मो को झला है कहीं न कहीं उनके साहित्य में झलकता है गुलज़ार बताते है हर चीज ज़िंदा हो जाती है ,जब भी कोई घटना शक्लें बदल -बदल कर बयान करती है । एक जख्म का दूसरे जख्म से गहरा तालुख (रिश्ता)होता है । दुख कम नही होता बस यही के हम दुख का हुलिया बदल लेते है ।
गुलज़ार के पिता की तीन पत्नियां थी गुलज़ार दूसरी पत्नी से पैदा हुए थे जब गुलज़ार चंद माह के थे तब उनकी माता सुजान कौर की मृत्यु हो गयी थी गुलज़ार माँ के वात्सल्य से बंचित हो गए ।
गुलज़ार साहब के पास माँ की कोई तस्वीर नही थी । चंद माह के बच्चे को शक्लें याद नही रहती । इस हवाले से एक वाक्य अहम है ,कि एक दिन गुलज़ार अपने रिश्तेदार की गोद से दीना के बाजार से गुजर रहे थे तब रिश्तेदार ने एक औरत की तरफ इशारा किया और बताया :" देख, ऐसे दिखती थी तुम्हारी माँ ! "
वो औरत जब मुसुकराई तो गुलज़ार को उसके सोने का दांत दिखाई दिया । उसको लगा कि उसकी माँ का भी एक दांत सोने का था । पर हकीकत उलट ही थी । देखे- कैसे गुलज़ार साहब ने बचपन के एक हवाले को जो सच नही था सच मान लिया । इस दीने के सच -झूठ बचपन के सच-झूठ आज भी उनके जेहन में जस के तस ज़िंदा हैं । (7)
गुलज़ार साहब दिल्ली में रहते हुए; बैत बाजी में हिस्सा लिया करते थे । उनके खानदान और उनका बड़ा भाई जसमेर सिंह उन्हें अकाउंट बनाना चाहते थे या उन्हें बिजनेस क्षेत्र में कार्य करवाना चाहते थे जो उनका खानदानी पेशा था ।
मुंबई जैसे बड़े शहरों में अकेले रहना जहाँ एक और उनके लिए मुश्किल साबित हुआ ,वहीं दूसरी और उनको ऐसी आज़ादी मिली जो खानदान की निगरानी में शायद मुमकिन नही थी । आप अकाउंटेंट तो बन जाते, शायद गुलज़ार कभी नही बन पाते । (8)
आपकी भाभी के अनुसार आपके अंदर व्यापारियों बाली खूबियां बिल्कुल नही थी । इसीलिए उनके पिता जी और भाई उनको निक्कमा और अनपढ़ कहने लगे ,जिसके बारे मे गुलज़ार साहब लिखतें है: -
''मेरा रुतवा तो बहुत पहले छिन गया था ,जब घर बालों ने कह दिया :
"बिजनस फैमिली में ये 'मीरासी' कहाँ से आ गया" । खामोशी कहती थी ,कि तुम हमसे नही हो"।

'खालसा कॉलेज' में एक साल गुजरने के बाद इंटरमीडिएट के लिए गुलज़ार 'नेशनल कॉलेज' शिफ्ट हो गए वहां उन्हें उर्दू अदब पढ़ने का मौका मिला। गुलज़ार साहब ने पढ़ाई भी छोड़ दी और अपने भाई जसमेर सिंह का घर भी और नार्थ मुंबई में कमरा ले लिया और सुदर्शन बक्शी नाम के व्यक्ति के गैराज में मोटर मेकेनिक का काम करना शुरू कर दिया। जब तक वह बिमल रॉय के अस्सिस्टेंट न बन गये।

गुलज़ार साहब की कलम से

वो मेरे साथ ही था दूर तक, लेकिन एक दिन
जो मुड़कर देखा तो वो दोस्त मेरे साथ नही था
फ़टी हो जेब तो कुछ सिक्के खो भी जाते हैं।

गुलज़ार की लेखनी में विभाजन का दर्द

हमने विभाजन के बाद हुये पलायन के बारे में पढ़ा है,सुना है लेकिन। गुलज़ार देश विभाजन के बाद हुए पलायन के चश्मदीद है उन्होंने अपनी आंखों से वो सारे मंजर देखे है। उन्होंने आज भी गलियों में जली हुई लाशें जिनको ट्रकों पर लादा जा रहा था; अधजले और अधकते जिस्म,फसाद फैलाने बाले सब लोग याद है। गुलज़ार साहब ने अपनी कहानी" ख़ौफ़" और फ़िल्म "पलकों की छावं" में पलायन के दुःखों को ब्यान करते हैं

गुलज़ार के साहित्य में हिन्दू-मुस्लिम एकता का भाव:-

गुलजार ने कोई भी फ़िल्म मुस्लिम किरदार की बगैर नही बनाई और न ही उनके बगैर मुकम्मिल होती है। उनकी नज्मो में तमाम मजहब एक साथ होते है। उनकी असल ज़िंदगी भी मुसलमानों के बगैर मुकम्मल नही होती ,चाहे वो मीना कुमारी हो या अल्लाह दत्ता जो गुलजार साहब के बड़े भाई की हम उम्र के थे जिसे गुलज़ार के वालिद उन्हें दीना से दिल्ली ले गए थे और वो उनके साथ ही पले बढ़े। गुलज़ार कहते है "अल्लाह दता मुझे आज भी बड़े भाई लगते है कहीं से भी ख्याल नही आया कि वो हिन्दू है या मुसलमान है।

गुलज़ार साहब लिखते है :-

मैंने रखी हुई आंखों पर
तेरी गमगी उदास आंखे
जैसे गिरजे में रखी खामोशी
जैसे रहलौं पे रखी इंजिले
एक आंसू गिरा आंखों से
कोई आयात नमाज़ी को
कोई हर्फ-ए-कलाम-ए-पाक मिले।

गुलजार ने हमेशा हिन्दू -मुस्लिम एकता पर बल दिया यह कहना अतिश्योक्ति नही होगा कियूंकि गुलज़ार के व्यक्तित्व में उनके सामाजिक जीवन मे एकता का भाव छिपा है उन्होंने कभी समुदाय विशेष के लिए नही लिखा हमेशा मानवता के लिए ,मनुष्य के मनोभावों के लिए ताउम्र अपनी कलम चलाई। गुलज़ार की कहानियों में ,पटकथाओं में जहाँ जहां हिन्दू पात्र है वहां मुसलमान भी है पर उनकी कहानियों के पात्र चाहे किसी धर्म विशेष से हो वह मानवता को ढूंढते है न कि किसी मजहब को।

डॉ.राम मनोहर लोहिया ने अपनी किताब भारत विभाजन के गुनहगार में लिखा है कि आज़ादी से पहले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भविष्य में आगे हिन्दू -मुसलमानों में दंगा ने हो इसलिए देश का विभाजन किया गया और विभाजन से वही इतनी अधिक मात्रा में हुआ, जिसे रोकना चाहते थे कि आदमी और बुद्धि की योग्यता से कोई भी निराश हो सकता है। छः लाख औरतें ,बच्चे और आदमी मारे गए ,अक्सर इतना पागलपन

हुया कि लगता था कि हत्यारे लोग हत्या और बलात्कार के नए ढंग से अनुभव चाह रहें हो न डेढ़ करोड़ लोग अपने घरों से उखाड़ दिए गये और उन्हे जीविका और आश्रम के लिए ऐसे क्षेत्रों में जाना पड़ा जहां अपनत्त्व नही था। जबरन व स्वेच्छापूर्वक ,समूचे इतिहास में शायद यह सबसे बड़ा देश –परिवर्तन था। आज तक कुछ लोग यह पता लगाने की कोशिश कर रहे है कि ज्यादा हैवान कौन था हिन्दू या मुसलमान।
इस तरह की खोज अपने आप में ही निर्रथक है। (10)
साम्प्रदायिक विचारधारा अवैज्ञानिक एवं अतार्किक तथ्यों पर आधारित है। साम्प्रदायिकता का समर्थन करने बाले जब अलगाव की बात करते है तो वह बस्तुतः आत्मछल का शिकार हो जाते है। धर्म के अलावा किसी अन्य क्षेत्र में किसी अन्य क्षेत्र में हिंदुओं,मुसलमानों, सिखों या ईसाईयों के अपने अपने सामूहिक हित नही थे मुस्लिम सम्प्रदायिकता मुस्लिमों को राजनीति से बिमुख न रख पाने की स्थिति में मुस्लिम सम्प्रदायवादियों ने 1907 में 'आल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना की। कुछ समय पश्चात जिन्ना भारतीय राजनीति में जितना महत्व चाहते थे उतना नही मिल पा रहा था। इसलिय अपनी राजनीतिक महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए उन्होंने मुस्लिम लीग के प्लेटफॉर्म से मुसलमानों के लिए अलग देश की मांग की। जिन्ना का अलग राष्ट्र बनाने का सपना तब और मजबूत हो गया, जब 1937 के चुनावों में काँग्रेस पार्टी ने उन राज्यों में जिन्ना अथवा उनकी मुस्लिम लीग से सहयोग लेने से इन्कार कर दिया,जहां मुसलमान निश्चित रूप से अल्पसंख्यक थे ।पाकिस्तान बनना 1946 में तय हो चुका था। जब 90 प्रतिशत मुस्लिम सीटें लीग ने जीती। कांग्रेस अंततः मुस्लिम जन समूह को राष्ट्रीय आंदोलन की और न खींच सकी। न हिन्दू – मुस्लिम सम्प्रदायिकता को रोक सकी परिणामस्वरूप भारत का विभाजन हो गया देश कई टुकडों में बंट गया। ((11)
गुलज़ार ने अपनी आंखों से विभाजन की के मंजर को ब्यान करते हुए बताते है कि समुन्द्र सिंह नाम का एक शख्स एक मुस्लिम बच्चे को घसीटता हुया ले जा रहा था। बह बच्चा उनके स्कूल में प्रार्थना कारवाता था। गुलज़ार ने जब उसे पूछा कि कहां जा रहे हो तो समुन्द्र सिंह ने पंजाबी में कहा , टुकड़े करण वास्ते! 'थोड़ी देर के बाद गुलज़ार ने जब उससे देखा तो उसकी तलवार खून से सनी हुई थी। वे तस्वीरें अब भी ज्यों की त्यों गुलज़ार की आंखों में घूमती है ...और उन तसवीरों ने उन्हें सालों साल ,तमाम रातों में, बेतरह झकझोर करके रख दिया। गुलज़ार कहते है कि पार्टीशन के इन दंगों के भयानक दृश्यों ने उन्हें और उनके भाई – बहनों को भी कट्टर धर्मान्धों में बदल दिया होता अगर उनके सामने उनके पिता की मिसाल सामने न होती। उनके पोटेजी के कई मुसलमान दोस्त थे और दंगों में सबने एक दूसरे का खयाल रखा। हर किस्म के संकट से एक दूसरे को बचाया। ऐसी इंसानियत की ताकत ने,सहिष्णुता की ऐसी भावना ने गुलज़ार को कट्टर होने से बचा लिया। (12)

निष्कर्ष

भारत विभाजन एक ऐतिहासिक घटना है। इतिहास को साहित्य के धरातल पर उतरना अपने –आप मे एक चुनौती है। किसी एक घटना के प्रति इतिहासकार और साहित्यकार के दृष्टिकोण में पर्याप्त अन्तर होता है। इतिहासकार जो घटित को प्रमाणित करने बाले दस्तावेजों, प्रमाणो पर होता है। उसका कार्य शब परीक्षा का है ,जबकि साहित्यकार ऐतिहासिक, परंतु निर्जन खण्डहरों में जीवन की धड़कन सुनता है। भारत विभाजन ने सदियों से एक साथ ,एक भूमि पर रहते आये हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच धीरे –धीरे पनपते घोर अविश्वास ,विभाजन से पहले और बाद में हुए भीषण दंगे ,निरपराध मनुष्य का रक्तपात ,आगजनी स्त्रियों पर बलात्कार की अमानवीय घटनाएं, चिर –परिचित भूमि को छोड़कर अंजनी जगह आशय की तलाश में जाते लोगों पर हुए अमानुषिक अत्याचार, अपनी भूमि से उजड़ने और उखड़ने की वेदना,विस्थापित के रूप में नये देश मे

बसने की समस्या ,परिवार से बिछुड़ी स्त्रियों के पुनः अपने परिवार में स्थान पाने की समस्याएं तोहफे में दी। इस प्रकार कांग्रेस तथा राष्ट्रवादियों की लापरवाही या भूलचूक के कार्यों, मुस्लिम बुर्जुआ की सत्ता आकांक्षा और औपनिवेशिक शक्ति द्वारा सत्ता को जब तक सम्भव हो सके,तब तक बनाये रखने की साजिश की बजह से भारत का विभाजन हुया जिसके परिणामस्वरूप इसकी भारी कीमत जनता और सम्पूर्ण सिंह जैसे उस बच्चे को चुकाना पड़ी जो बाद में परिस्थितियों का सामना करके सम्पूर्ण सिंह से "गुलज़ार साहब" बन गये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1 -बोस्कीयना ;यशवंत व्यास पृष्ठ संख्या 157।
2 ज़ीरो लाइन पर गुलज़ार ; अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 24।
3 ज़ीरो लाइन पर गुलज़ार; अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या 27।
4 ज़ीरो लाइन पर गुलज़ार ; अशोक भौमिक पृष्ठ संख्या भारत 24।
5 रात पशमीने की ; गुलज़ार पृष्ठ संख्या 60।
6 आवाज से लिपटी खामोशी ;गुलशेर बट पृष्ठ सांख्य 52।
7 आवाज से लिपटी खामोशी ;गुलशेर बट पृष्ठ संख्या 54।
8 आवाज से लिपटी खामोशी ; गुलशेर बट पृष्ठ संख्या 56।
9 आवाज से लिपटी खामोशी ;गुलशेर बट पृष्ठ संख्या 31।
10विभाजन के गुनहगार; डॉ. राममनोहर लोहिया पृष्ठ संख्या :49)
11विभाजन पर आधारित हिंदी उपन्यास साहित्य में मूल्यबोध :आर्या आपरजीता सिंह :पृष्ठ संख्या 9)
12वो जो है;मेघना गुलज़ार पृष्ठ संख्या 8।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY